ISBN : 978-93-5321-964-2

2.

हिन्दी कविता में समाज: नए परिप्रेक्ष्य में

डा. हेमलता. सी.पी ,
असिस्टेंटप्रोफसर ,
हिन्दी विभाग, डब्ल्यू.एम.
ओओर्टसएण्डसयन्सकॉलेज

"कविता वक्तव्य नहीं गवाह है
कभी हमारे सामने
कभी हमसे पहले
कभी हमारे बाद "
(कविता, कुंवर नारायण जी)

श्री कुंवर नारायण जी की इन्हीं पंक्तियों से आज की कविता की त्रिकाल-दर्शिता हमारे सम्मुख आते है ।इन पंक्तियों द्वारा कवि सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ चित्र खींचते हैं । भूमंडलीकरण के शिकार बन गये ,नये जीवन परिस्थितियों में फंस गये सामान्य मानव की दुरुवस्था अति-दयनीय है ।समाज की मुख्यधारा से हटे गये, हाशिये पर पड गये जन जीवन का वास्तविक चित्रण कविताओं द्वारा हमारे सामने उभर आती हैं। अपने अस्तित्व की रक्षा और मुक्ति के लिए आवाज उठानेवाले नए समाज कविता का केन्द्र बन गया है। स्त्री विमर्श,दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, विकलांग विमर्श, वृद्ध विमर्श आदि पर आधारित कविताएं इसका प्रमाण है । राजेश जोशी जी की कविता 'थोड़ी सी जगह ' में मेहनतियों केलिए समाज में स्थान देने का आह्वान
है।

.
जैसे:-
" वे जो इस धरती के नमक है
उन्हें चाहिए बस उतनी ही जगह
जितनी चाँद का अक्स घेरता है पानी में"
(थोड़ी सी जगह, राजेश जोशी)

Principal
W.M.O. Arts & Science College
Muttil P.O., Wayanad

Scanned with AnyScanner

ISBN : 978-93-5321-964-2

कवि के अनुसार ये सामान्य लोग ही असल में धरती को सुरक्षित रखने के लिए हड्डी तोड काम करते हैं । लेकिन समाज में कहीं भी इनके नाम भी नहीं मिल पाता है । ये हाशिये पर अनाम, चुपचाप और असहाय रहने केलिए विवश हो जाते हैं । वे अपने लिए थोड़ी सी जगह माँगते हैं । श्री अशोक वाजपेयी की कविता 'विलाप' में कवि कहते हैं कि—

"मैं विलाप करता हूँ
सिर्फ कविता में
क्योंकि उससे बाहर विलाप और
स्वप्नों के लिए
अब कोई जगह नहीं बची "
(विलाप, अशोक वाजपेयी)

यहाँ कवि के मन में अतीत के प्रति सहज आत्मीयता है । लेकिन आज के डरावने परिस्थितियों के प्रति आकुलता भी है । इसलिए कविता में विलाप प्रकट करते हैं । इससे ऐसी सूचना भी मिलते है कि आज का समय बहुत बदल गया है । आदमी-आदमी के बीच बहुत अधिक अजनबीपन है । मौसम बदल गये है । भूमंडलीकरण के भीषण परिस्थितियों से डरकर जीने वालों की स्थिति श्री अरुण कमल जी की कविता "वक्त " में स्पष्ट रूप में प्रस्तुत है ।

"अपने ही घर की चौखट पर
बैठा आदमी
मारा जा रहा है ।"
(वक्त, अरुण कमल)

जहाँ तक आदमी अपने घर में सुरक्षित नहीं हो तो समाजिक विडंबना का हद सोच के भी परे हो जाते है ।

जैसे:-
"जहर-माहुर फल फूल रहे हैं
और फूलों की क्यारीयों में जल नहीं ।"
(वक्त, अरुण कमल)

इससे पता चलता है कि भलाई सूखे जा रहे है,बुराइयाँ फलते-फूलते है । मानवीय मूल्यों की कमी की ओर सूचना मिलते हैं । मानवीय मूल्यों के नष्ट हो जाने पर सामाजिक स्थिति में जो घुटन पैदा हो जाते है,इसे सहना कठिन है। श्री केदारनाथ सिंह की कविता "धब्बा " में मनुष्य जीवन की त्रासदियों का चित्रण है ।

" सुबह से पडा था
सडक के बीचों बीच
लाल दमकता हुआ खून का धब्बा
अब वह सूखकर लाल से भूरा

Scanned with AnyScanner

ISBN : 978 93 5351 993 5

और धुएँ से धीरे-धीरे काला होता जा रहा था
जो भी उधर जाता था
देखता था बच्चे को
फिर आँख बचा दाँये या बाँये से
निकल जाता था आगे।"
(बच्चा, केदारनाथ सिंह)

इन पंक्तियों में दुनिया की भीषण स्थिति के साथ मनुष्य के अमानवीय व्यवहार की स्थिति भी प्रस्तुत किया है । नये जमाने में लोग अपने-अपने स्वार्थ में व्यस्त है । मनुष्य के स्वार्थ भाव जिस हद तक पहुंचते हैं वहाँ मानवीयता नष्ट हो गये हैं । धूप के बच्चे से या मनुष्य जीवन के प्रति समाज का कोई ध्यान नहीं है । सहानुभूति, दया, करुणा ये सब नष्ट हो रहे हैं । व्यक्तिगत दुराव की पूर्ति के लिए जीने के लक्ष्य में समाज दौड़ में हैं । इसी दौड़ में अकेले, असहाय,बेचैन हो गये मनुष्य के प्रतीक आज की कविता का विषय है । नारी जीवन भी समाज में शोषण के शिकार बन गयी हैं । पुरुष वर्चस्व समाज में स्त्री का हालत दोयम दर्जे का है। अनामिका जी की कविता

"स्त्रियाँ " इसका स्पष्ट प्रमाण हैं । हाशियेकृत स्त्री को केवल उपभोग की चीज मानते हैं और उसके दुख-दर्द को दूर के रिश्तेदारों के समान भोगते है । इनकी वेदना की कहानियों को अनसुना करते हैं । समाज से तिरस्कार पाकर समाज केलिए आयु भर काम करने वाली नारी की विषमताओं को आत्मीयता से समझनेवाला भी नहीं मिलते है ।

"एक दिन हमने कहा
हम भी इन्सान है
हमें कायदे से पढो एक-एक अक्षर
जैसे पढा होगा बीए के बाद
(स्त्रियाँ ,अनामिका)

अनामिका जी की कविता 'ओढनी' में नारी जीवन की विषमतायें , घुटन और भविष्य के प्रति आकांक्षायें देख सकते है । आपके अनुसार स्त्री और पुरुष के बीच में भिन्नता उसके घर से ही शुरु होते है । लड़कियों केलिए अपने घर में कहीं जगह नहीं मिलती है । जिस प्रकार बाल और नाखून उसके स्थान से अलग होते तो इनका कोई मूल्य नहीं है, ऐसी हालत ही स्त्री की भी।

जैसे:-

जिनका कोई घर नहीं होता
उनकी होती है भला कौन-सी जगह?
कौन-सी जगह होती है ऐसी
जो छूट जाने पर

ISBN : 978-93-5321-964-2

औरत हो जाती है
कटे हुए नाखूनों,
कंघी में फंस कर बाहर आए केशों सी
एकदम से बुहार दी जानेवाली?
(बेजगह, अनामिका)

अरुण कमल की कविता "डैली पैसेंजर " में कामगार औरतों की परेशानियाँ सशक्त ढंग में चित्रित किया है । दिन भर के काम से थकी हुई वापस जानेवाली औरत से एक सह-यात्री की आत्मीय संवेदना इसलिए महत्वपूर्ण है कि समाज में ऐसी यात्री लोग बहुत कम मिलते हैं । ऐसा न हो तो यहाँ केरल में 'सौम्या' की मृत्यु जैसी दुर्घटनायें नहीं होता था । उसकी मृत्यु मनुष्य के अमानवीय व्यवहार का प्रमाण है । अपने घर लौटनेवाली बेचारी लड़की को बलात्कार करके मार डाला था, क्या स्त्री केवल उपभोग की चीज़ है ? उसको अपनी इच्छा के अनुसार सैर करने का अधिकार भी नहीं है ? ये सारे प्रश्न का जवाव नहीं मिलता है। पर इस कविता में नए भविष्य की सूचना भी मिलते है कि समाज स्त्री के अस्तित्व को मानने की करुणा दिखाएंगे। मंगलेश डबराल जी अपनी कविता 'लड़की और अन्धा आदमी ' में उच्च वर्ग की स्वार्थता ,सुख-लोलुपता आदि के प्रति आक्रोश व्यक्त करते है। आधुनिक युग में प्रेम का मतलब स्वार्थता है ।लड़की अन्धे आदमी से कहतेहैं कि-

" तुम देख नहीं पाते उनकी करुणा
भीख में दिया गया एक सिक्का है
और प्रेम है महज स्वार्थ
तुम जो अन्धकार देखते हो
वह इस भागती हुई आत्माहीन भीड से निकला है ।"
(लड़की और अन्धा आदमी, मंगलेश डबराल)

आज भी समाज में लड़की का जन्म स्वीकार्य नहीं है । उसे अपनी माँ के कोख में ही समाप्त करने की क्रूरता है । आगे अपने घर में या विवाह के बाद पति के घर में उसकी जिन्दगी समाप्त हो जाती है । उससे भी बढकर बडे- बडे कंपनियों के माल की बिक्री बढाने केलिए प्रदर्शन का चीज़ बनाती है । रजनी तिलक की 'औरत' कविता की पंक्तियों में आज की विज्ञापन संस्कृति के षडयंत्र की गुडिया मात्र बनायी गयी स्त्री की विषमतायें व्यक्त होती है ।

जैसे:-
"आज इस आधुनिक युग में
गर्भ में ही कन्या वध होता है
वहाँ से बच गए तो
ससुराल में होता है उसका होम
दहेज की आग में
नारी इस युग की त्रासदी
पतित संस्कृति की

Scanned with AnyScanner

ISBN : 978-93-5321-964-2

सुष्मिता सेन और ऐश्वर्या राय
पूँजीवाद के मकडजाल का खिलौना।"
(औरत, रजनी तिलक)

स्त्रियों के जीवन में हर कहीं , हमेशा खतराएं छिपे हुए है। 'औरत और घर' कविता में कात्यायनी जी कहती हैं –

"लगातार पीछा करता था
जब भी औरत निकली थी बाहर सड़क पर
जानता था वह, औरत के लिए
और पूरे समाज के लिए भी
(औरत और घर, कात्यायनी)

इस बुरे समय का विकराल चित्र प्रस्तुत करके भी उदय प्रकाश जी कीकविता 'औरतें' समाज को चेतावनी देते हैं।

जैसे:-
" हज़ारों-लाखों छुपती है गर्भ के अन्धेरे में
इस दुनिया में जन्म लेने से इन्कार करती हुई
वहाँ भी खोज लेती हैं उन्हें भेदिया ध्वनि तरंगें
वहाँ भी,
भ्रूण में उतरती है हत्यारी कटार।"
(औरतें ,उदय प्रकाश)

इतने क्रूर समय में पृथ्वी में जन्म लेने से इनकार करनेवाली बच्ची को भी निष्ठुर समाज छोड़ते नहीं है। मानव की निष्ठुरता कटार के रूप में भ्रूण हत्या कर रहे हैं। लड़की होकर जनम लेने में उसका कोई कसूर नहीं है। यह जानते हुए भी उसके ऊपर अन्याय और अत्याचार चलाते हैं। मानवीय मूल्यों के नष्ट हो जाने पर जीवन में जो कठिनाई आ जाते है, इसका पर्दाफाश अनितावर्म जी की कविता 'मैं खोजता हूँ ' में किया है।

"इंसानों से भरी-पूरी दुनिया में
मैं खोजता हूँ एक मनुष्य
जो बाशिंदा हो इस मृत्युलोक का
धरती पर आए हुए पहले निस्वार्थ प्राणी की तरह
ऐसे मनुष्य को खोजना
एक भ्रम का पीछा करना है
एक ऐसा भ्रम जिसे मैं सत्य मानती हूँ "
(मैं खोजता हूँ, अनितावर्म)

Scanned with AnyScanner